Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 81-82

पण्डित ओगेटि परीक्षित शर्मा–विरचित ''यशोधरामहाकाव्यम्''

श्री रामपाल, शोधार्थी, संस्कृत विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोध–सार
गौतम बुद्ध के परिनिष्क्रकण कथा पर आश्रित यशोधरामहाकाव्य पण्डित ओगेटि परीक्षित शर्मा द्वारा विरचित आधुनिक संस्कृत साहित्य का संगीतमय व करूणरस प्रधान एक उच्चकोटि का काव्य है। गौतम बुद्ध के जीवन चरित पर अनेक संस्कृत रचनाएं उपलब्ध हैं, किन्तु गौतमबुद्ध की प्राणप्रिया यशोधरा का जीवन चरित संस्कृत साहित्य में चिरकाल से उपेक्षित रहा है। गौतम ने ज्ञान प्राप्ति के लिए महामिनिष्क्रमण किया, किन्तु विरह–पीड़िता, जीवन संघर्ष के प्रति सतत् तत्परा त्याग एवं करूणा की प्रतिमूर्ति–स्वरूपा यशोधरा ने धर्म, धैर्य एवं साहित्य गुण की पराकाष्ठा का प्रदर्शन किया है। परन्तु उनका महनीय–चरित्र समाज के सम्मुख उजागर नहीं हुआ है। श्री मैथिली शरण गुप्त ने ''यशोधरा'' नामक हिन्दी खण्डकाव्य का प्रणयन किया किन्तु इस विषय पर संस्कृत कवियों की मौनता का एक आश्चर्य का विषय है। कवि परीक्षित शर्मा ने सर्वप्रथम यशोधरा के जीवन चरित्र को विषय बनाकर एक संस्कृत महाकाव्य का प्रणयन करके इस शून्यता को पूर्ण किया है। काव्यान्तर्गत भारतीय संस्कृति के बहुमूल्य तत्वों का समावेश है– आदर्शनारी, दाम्पत्य जीवन, गूढ़ज्ञानादि है।
मुख्य शब्दः यशोधरा महाकाव्य,

शोधोद्देश्य :
उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि यशोधरा एक ऐसी अमूल्य कृति है जिसके द्वारा संस्कृत साहित्य भण्डार सुसमृद्ध हुआ है। अध्ययनाभाव के कारण यह अनवद्यकृति अद्यापि अवहोलित है। नवीन विषय वस्तु पर आधारित इस आधुनिक काव्य का गम्भीर परिशीलन अत्यन्त आवश्यक है। यह शोध प्रबन्ध इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है। ओगेटि वंश में उत्त्पन्न किष्टय्य नामक एक कौण्डिन्य ब्राह्मण हुए।[1] जो कृष्णशाखा से सम्बद्ध थे। जिनके गुण दक्षित भारत भर में गाये जाते थे, जो सज्जनों के नेता थे। अनेक पल्लव वंशी राजाओं ने जिनके चरणयुगलों को पूजा था। ओगेटि वंश शान्त स्वभाव प्रकृति का था जो सदा वेदान्तानुयायी था। ओगेटि वंश भारतवनी में किसी अन्य शाखा से द्वेष नहीं करता था।[2] इसी सन्तति में इनके कनिष्ठ पुत्र ''साम्बमूर्ति'' हुए जो वाल्यावस्था से ही गुणज्ञ, धर्मात्मा ब्राह्मण थे। दिव्यपुरूष साम्बमूर्ति एवं कौशल्यादेवी के उभय संयोग से 20 अगस्त 1980 ई0 को एक महान कवि पण्डित ओगेटि परीक्षित शर्मा का बेल्लाडु (आन्ध्र प्रदेश) नामक स्थान पर प्रादुर्भाव हुआ।[3] आपने आन्ध्र विश्वविद्यालय से भाषा प्रवीण, मुम्बई विश्वविद्यालय से संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, भाषा विज्ञान में एम0ए0 किया। राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरूपति ने आपको डी0लिट0 की मानद उपाधि से अलंकृत किया। आपकी ललितगीता लहरी, अक्षयगीत रामायणम्, परीक्षिन्नाटकचक्रम्, जानपदनृत्यगीत मंजरी, सौन्दर्यमीमांसा, कालायतस्मै नमः, श्रीमत्प्रतापराणायनम् इत्यादि रचनाएं प्रकाशित हो चुकी है। आपको अखिल भारतीय कालिदास पारितोषिक और साहित्य अकादमी अवार्ड के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं ने महाकवि मण्डल चक्रवर्ती जैसी प्रतिष्ठापद उपाधियों से विभूषित कया।[4]

इस महान कवि की नवरस निर्मित कलम पर उस समय विराम लग गया, जब 1 फरवरी 2001 को पण्डित ओगेटि परीक्षित शर्मा देखते देखते संसार की ऑखों से ओझल हो गये। भारतवनी में समकालीन कवियों में शर्मा अद्वितीय कवि थे।

''यशोधरामहाकाव्यम्'' शिशुपाल वध महाकाव्य की तरह सर्गों में निबद्ध है। काव्य की कथावस्तु गौतमबुद्ध के महाभिनिष्क्रमण वृतान्त पर आधारित है। काव्यान्तर्गत प्रसादगुण की अगाधता, माधुर्य का मधुर सन्निवेश, कोमलकान्त पदावली, अलंकारों की रमणीयता, छन्दों की क्रमिकता और भाव सौष्ठव आदि का पर्याप्त मात्रा में रहने के कारण यह काव्य प्रसिद्ध है।

काव्यशास्त्रों में वर्णित महाकाव्य के समस्त लक्षण इसमें पाये जाते हैं। यह अत्यन्त सरस सुललित देववाणी भाषा में लिपिबद्ध हैं राजा शुद्धोधन, गौतम एवं यशोधरा का विवाह उनके वैवाहिक जीवन, राहुल का जन्म, गौतम का परिनिष्क्रमण यशोधरा–विलाप, राजपरिवार की दुःखपूर्ण स्थिति, ज्ञान प्राप्ति के अनन्तर गौतम का प्रत्यागमन, उनके धर्म–सन्देश ये समस्त विषय का सजीव वर्णन इस महाकाव्य में उपलब्ध होता है। एतदतिरिक्त इस कृति में विविध स्थान[5], पर्वत[6], नदी[7], ऋतु[8], सूर्योदय[9], चन्द्रोदय[10] घटनाओं के हृदयस्पर्शी वर्णन मिलते हैं।

अनेक नवीन शब्दों का व्यवहार, ममस्पर्शी सूक्तियाँ, उपमा, रूपक अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों के द्वारा काव्य की रमणीयता द्विगुणित हुई है।

नवम सर्ग में प्रसाद परित्याग के पूर्व गौतम की भावप्रवणमनोदशा, मध्यरात्रि में निन्द्रागत पत्नी एवं पुत्र के करूण दृश्य, विरह पीडिता यशोधरा के विलाप का वर्णन पाठक के हृदय को छू लेता है।[11]

कवि ने केवल दुःख हताशा के साथ महाकाव्य को समाप्त नहीं किया है। गौतम परिनिष्क्रमण के अनन्तर यशोधरा गम्भीर मनोवेदना से उभर आती है; नव–चेतना एवं साहस को प्राप्त करती है। पुत्र वात्सल्य से उनका जीवन पुनः पल्लवित होता है। बुद्ध के पुनरागमन से एवं बहुमूल्य उपदेशों के द्वारा उनमें परम ज्ञान का उदय होता है। इससे करूणा एवं माधुर्य का एक अपूर्व समन्वय पाठक के सम्मुख उपस्थित होता हैं महाकवि भवभूति ने करूण को ही एक मात्र रस स्वीकार किया है–

एको रसः करूण एवं निमित्तभेदात्
भिन्नः पृथक्पृथगिव श्रयते विवर्तवान्
आवर्तबुद्बुद्तरंगमयान्वि कारा–
नम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समस्तम्।।

पं0 परीक्षित शर्मा भी उनसे सहमत है। अतः इस महाकाव्य को करूणरस से संप्लावित किया है। वे स्वयं कहते हैं –

रचयेयं तथा काव्यं करूणारस'निस्तुलम्।[12]
यशोधरा–विलापं तु ग्रावारोदनं–कारणम्।।[13]

काव्य के नवम सर्ग में महाभिन्ष्क्रिमण के समय राजा के भावविह्वल एवं उद्वेगपूर्ण दशा का वर्णन अत्यन्त हृदय स्पर्शी है–

नहि क्षणं तिष्ठतिः तप्तचित्तः नहि क्षणं पश्यति भिन्नचेताः।
अशान्त–भावैः ज्वलितो नरेन्द्रः प्रतिक्षणं स्थान विपर्ययेन।।[14]

गौतम के प्रति यशोधरा की यह उक्तियाँ उल्लेखनीय हैं–

वद में प्रिय विश्वभूषण विलपन्तीमनिशं समीक्ष्यमाम्।
न हिते ते हृदयं विदीर्यते बत राज्ञां हृदयं शिलामयम्!
कथमेवमनयन्य–हिन्तया ग्लपितं कोमल–मानसं तव।
न हि दैहिक–सौरण्य–हीनता परमार्थाय पदं भविष्यति।।
अतिदूर विराजतो नगः तरलो रभ्यतरः प्रकाशते।।[15]

निष्कर्ष –

अन्त में कह सकते है कि पं0 ओगेटि परीक्षित शर्मा ने ''यशोधरामहाकाव्यम्'' जैसे विस्तृत महाकाव्य की रचना कर संस्कृत साहित्य की अभिवृद्धि की है। आज हम स्वार्थभूत अज्ञानता के गर्त में गिरते चले जा रहे है जब ऐसे में गौतमबुद्ध का उदान्त चरित्र समाज के लिए प्रेरणास्रोत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. यशोधरामहाकाव्यम्– 1/47
2. वही – 1/48
3. वही – 1/49, 50
4. वही – परिशिष्ट भाग
5. वही – 2/1–35
6. वही – 1/71–100
7. वही – 1/101–125
8. वही – 17/1–43
9. वही – 6/1–11
10. वही – 7/24–33
11. वही – 9/1–47
12. वही – 1/34
13. वही – 1/38
14. वही – 9/9
15. वही – 13/5, 16,26